कहानी 3

गांव के स्कूल में जब नये हेडमास्टर की नियुक्ति हुई तो उन्होंने पाया कि गांव के कुछ बच्चे काफी समय से स्कूल नहीं आ रहे हैं। उन्होंने सोचा क्यों न इस संबंध में प्रधानजी से बात कर ली जाये। उन्होंने ऐसे बच्चों के नामों की सूची बनाई और प्रधानजी से मिलने पंहुचे। प्रधानजी ने पूछताछ की तो पता चला कि जो बच्चे स्कूल नहीं जाते उनमें से दो बच्चे कल्लोदेवी के हैं – तेरह साल का लड़का और दस साल की लड़की। कल्लो देवी दूसरों के खेतों में काम करती है और उसके दोनों बच्चे भी उसके साथ खेतों में काम करते हैं। दूसरा मामला रामकिसन का था। उसका बड़ा बेटा इसलिए स्कूल नहीं जाता था क्योंकि उसे उसने शहर भेज दिया था जहां वह एक फैक्ट्री में काम करता था। जुनैद का बेटा आठवीं पास करने के बाद पास के कस्बे में मोटर मैकेनिक का काम सीख रहा था। रजिया ने पांचवीं कक्षा के बाद अपनी बेटी की पढ़ाई छुड़ा दी थी और वह सिलाई–कढ़ाई के काम में अपनी मां की मदद करती है।

प्रधान जी ने हैडमास्टर जी से कहा – लोग कई बार आर्थिक मजबूरियों की वजह से बच्चों को काम पर भेजने को मजबूर होते हैं। क्यों न हम लोग घर–घर जाकर इन सभी लोगों से मिलें और पता लगायें कि वे कौन सी मजबूरियां हैं जिनकी वजह से उन्हें अपने बच्चों की पढ़ाई छुड़ानी पड़ी। हैडमास्टर जी इस पर सहमत हो गये और फिर वे दोनों सबसे पहले कल्लोदेवी के घर पहुंचे।

कल्लो देवी ने कहा, "मेरे बच्चे तो मजदूरी के काम में मेरी मदद करते हैं। जहां तक पढ़ाई की बात है पढ–लिख कर भी क्या करेंगे। मेहनत–मजदूरी तो तब भी करनी है। प्रधान जी ने उसे समझाया कि घर के छोटे–मोटे काम में मदद करना तो ठीक है, पर बच्चों को शिक्षा

से वंचित कर खेतों में काम करवाना ठीक नहीं है। हेडमास्टर जी बोले – स्कूल में शिक्षा मुफ्त है, वर्दी भी मिलती हैं और लड़कियों के लिए विशेष छात्रवृत्ति की व्यवस्था भी है। प्रधान जी ने कहा उसी गांव में विकास के अनेक कार्य किये जा रहे हैं तुम चाहो तो मनरेगा के अंतर्गत उनमें रोजगार प्राप्त कर सकती हो।

फिर वे जुनैद से मिले और उसे समझाया कि बेटे को शिक्षा पूरी कर लेने दो फिर उसे कोई भी काम सिखा सकते हो। शैक्षिक योग्यता बढ़ने से उसे रोजगार भी बेहतर मिलेगा।

जब वे रामकिशन से मिले जिसका बेटा छोटी उम्र में फैक्ट्री में काम कर रहा था तो उसे भी उन्होंने यही समझाया कि शिक्षा की कीमत पर बच्चों से काम कराना बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए खतरनाक है, और शिक्षा पूरी करने पर उसे बेहतर रोजगार हासिल हो सकता है।

पर जब वे रजिया से मिले तो वह बोली उसकी बेटी तो सिलाई–कढ़ाई के काम में उसकी मदद करती है। प्रधान जी बोले – "रजिया तुम्हारी बेटी तुम्हारे काम में मदद तो करती है, पर ये उसके पढ़ने–लिखने का समय है, उसे वापस स्कूल में दाखिला दिलाओ। थोड़ी बहुत कला के तौर पे सिखा सकती है लेकिन काम के तौर पे नहीं।

अंत में प्रधान जी और हैडमास्टरजी ने सभी को समझाया, "बाल श्रमिक उस बच्चे को कहते हैं जिससे ऐसा काम कराया जाता है जिसकी वजह से न केवल उसकी शिक्षा अधूरी रह जाती है, बल्कि उसके शारीरिक और मानसिक विकास को भी नुकसान पहुंचता है, और जो पारिवारिक आमदनी में योगदान करें या परिवार की आमदानी को बढ़ायें – अशंकालिक या पूर्णकालिक रूप में।"

आप लोगों के बच्चों को बाल श्रमिक कहा जा सकता है। पर हम सभी प्रयास करेंगे कि उन्हें काम से हटा लिया जाये। इस संबंध में मैं बाल संरक्षण समिति के सदस्यों से बात करूंगा। जहां तक आर्थिक मजबूरी का सवाल है गांव में विकास कार्य में तेजी आ रही है जिसके जरिये आपको रोजगार के ज्यादा मौके मिलेंगे। इसके अलावा हम इस क्षेत्र में कार्य करने वाली सामाजिक संस्थाओं का सहयोग भी लेंगे जो आपको विभिन्न योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में मदद कर सकती हैं।

1

2

3

4

5

6

चर्चा के बिन्दुः

- बाल श्रमिक किसे कहते हैं?
- बाल श्रम के विभिन्न रूप क्या हैं।
- गांव स्तर पर पंचायत और समितियों की क्या जिम्मेदारियाँ होती हैं?
- विद्यालय के शिक्षक और ग्राम पंचायत किस रूप में बाल श्रम के उन्मूलन में मदद कर सकते हैं?

Concept and Design: New Concept Information Systems Pvt. Ltd., New Delhi

Supported by

unicef

unite for children